"बचन गुरू का"

- सतिगुर नो सभ को वेखदा जेता जगत संसार । डिठै मुकति न होवई जिचर सबदि न करे बीचार ।

अर्थः- जितना ये सारा संसार है इसमें हरेक जीव सतिगुरू के दर्शन करता है पर निरे दर्शन करने से मुक्ति नहीं मिलती । जब तक जीव सतिगुरू के शबद में विचार नहीं करता ।

- हउमै मैल न चुकई नामि न लगै पिआर । इकि आपे बखसि मिलाइअन दुबिधा तजि विकार । नानक इकि दरसन देखि मरि मिले सतिगुर हेत पिआर ।1। म03

अर्थः- क्योंकि विचार किए बिना अहंकार रूपी मन की मैल नहीं उतरती और नाम के प्रति प्यार उत्पन्न नहीं होता । कई मनुष्यों को प्रभू ने खुद ही मेहर करके मिला लिया है जिन्होंने मेर - तेर और विकार छोड़े हैं । हे नानक ! कई मनुष्य सतिगुरू के दर्शन करके सतिगुरू के प्यार में बिरती जोड़ के मर के भाव, स्वैभाव का अहंकार गवा के हरी में मिल गए हैं ।

- सतिगुरु न सेविओ मूरख अंध गवार । दूजै भाइ बहुत दुख लागा जलता करे पुकार ।

अर्थः- अंधे मूर्ख गवार ने अपने सतिगुरू की सेवा नहीं की माया के प्यार में जब बहुत दुखी हुआ तब जलता हुआ विरलाप करता है ।

जिन कारण गुरु विसारिआ से न उपकरे अंती वार । नानक गुरमति सुख पाइआ बखसे बखसणहार ।2।पउड़ी। (3-594)

अर्थः- और जिनके लिए सतिगुरू को विसारा था वे आखिरी वक्त पर मुश्किल में नहीं उसका साथ देने पुकारने पर भी नहीं आते । हे नानक ! गुरू की मति ले के ही सुख मिलता है और बख्शने वाला हरी बख्शता है ।

- गुर कै बचनि मोहि परम गत पाई । गुरि पूरै मेरी पैज रखाई ।1। गुर कै बचनि धिआइओ मोहि नाउ । गुर परसाद मोहि मिलिआ थाउ ।1। रहाउ ।

अर्थः- गुरू के उपदेश पर चल के मैंने सब से ऊँची आत्मिक अवस्था हासिल कर ली है । दुनिया के विकारों के मुकाबले से पूरे गुरू ने मेरी इज्जत रख ली है । हे भाई ! गुरू के उपदेश की बरकत से मैंने परमात्मा का नाम सिमरा है । और गुरू की कृपा से मुझे परमात्मा के चरणों में जगह मिल गई है मेरा मन प्रभू चरणों में टिका रहता है ।

गुर कै बचनि सुणि रसन वखाणी । गुर किरपा ते अंम्रित मेरी बाणी ।2।

अर्थः- हे भाई ! गुरू के उपदेश द्वारा परमात्मा की सिफत सालाह सुन के मैं अपनी जीभ से भी सिफत सालाह उचारता रहता हूँ । गुरू की कृपा से आत्मिक जीवन देने वाली सिफत सालाह की बाणी मेरी राशि पूँजी बन गई है ।

गुर कै बचनि मिटिआ मेरा आप । गुर की दइआ ते मेरा वड परताप ।3।

अर्थः- गुरू के उपदेश की बरकत से मेरे अंदर से मेरा स्वैभाव मिट गया है । गुरू की दया से मेरा बड़ा तेज - प्रताप बन गया है कि कोई विकार अब मेरे नजदीक नहीं फटकता ।

गुर कै बचनि मिटिआ मेरा भरम । गुर कै बचनि पेखिओ सभ ब्रहम ।4।

अर्थः- गुरू के उपदेश पर चल के मेरे मन की भटकना दूर हो गई है और अब मैंने सर्व - व्यापी परमात्मा देख लिया है ।

गुर कै बचनि कीनो राज जोग । गुर कै संग तरिआ सभ लोग ।5।

अर्थः- गुरू के उपदेश की बरकति से गृहस्थ में रह के ही मैं प्रभू - चरणों का मिलाप सुख पा रहा हूँ । हे भाई ! गुरू की संगत में रह के सारा जगत ही संसार समुंद्र से पार हो जाता है ।

गुर कै बचनि मेरे कारज सिध । गुर कै बचनि पाइआ नाउ निध ।6।

अर्थः- हे भाई ! गुरू के उपदेश पर चल के मेरे सारे कामों में सफलता हो रही है । गुरू के उपदेश से मैंने परमात्मा का नाम हासिल कर लिया है जो मेरे लिए सब कामयाबियों का खजाना है ।

जिनि जिनि कीनी मेरे गुर की आसा । तिस की कटीऐ जम की फासा ।7।

अर्थः- हे भाई ! जिस जिस मनुष्य ने मेरे गुरू की आस अपने मन में धारण कर ली है । उसकी जम की फांसी कट गई हैं ।

गुर के बचनि जागिआ मेरा करम । नानक गुरु भेटिआ पारब्रहम ।8। (5-239)

अर्थः- हे नानक ! कह गुरू के उपदेश की बरकत से मेरी किस्मत जाग गई है । मुझे गुरू मिल गया है और गुरू की मेहर से मुझे परमात्मा मिल गया है ।

- तू आपे आपि आपि सभ करता कोई दूजा होई सु अवरो कहीऐ । हरि आपे बोलै आपि बुलावै हरि आपे जल थल रव रहीऐ ।

अर्थः- हे हरी ! तू स्वयं ही स्वयं है और स्वयं ही सब कुछ पैदा करता है । किसी और दूसरे को जन्मदाता तब कहेंजो कोई और हो ही । हरी खुद ही सब जीवों में बोलता है । खुद ही सबको बुलाता है और खुद ही जल में थल व्याप रहा है ।

हरि आपे मारै हरि आपे छोडै मन हरि सरणी पड़ रहीऐ । हरि बिन कोई मारि जीवाल न सकै मन होइ निचिंद निसल होइ रहीऐ ।

अर्थः- हे मन ! हरी खुद ही मारता है और खुद ही बख्शता है । इस वास्ते हरी की शरण में पड़ा रह । हे मन ! हरी के बिना कोई और ना

मार सकता है ना जीवित कर सकता है इसलिए निश्चिंत हो के लंबी तान ले बेफिक्र हो जा किसी और की ओट ना देख और सबसे बड़े हरी की आस रख ।

उठदिआ बहदिआ सुतिआ सदा सदा हरि नाम धिआईऐ जन नानक गुरमुखि हरि लहीऐ । (3-594)

अर्थः- हे दास नानक ! अगर उठते - बैठते सोए हुए हर वक्त हरी का नाम सिमरें तो सतिगुरू के सन्मुख हो के हरी मिल जाता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"